नवभारत टाइम्स

22ND Sept, 2019

'विक्रम' लैंडर से संपर्क की सभी संभावनाएं खत्म

शनिवार को चंद्रमा पर रात शुरु

चंद्रयान-2 'विक्रम' लैंडर की कार्य अवधि भी खत्म हो रही

एजेंसी। बेंगलुरु

चंद्रयान-2 के लैंडर 'विक्रम' से संपर्क की संभावनाएं अब खत्म हो गई हैं. 'विक्रम' को चंद्रमा पर हार्ड लैंडिंग के बाद से ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान (इसरो) का अब तक संपर्क नहीं हो पाया है. लेकिन, अब विक्रम से संपर्क की रही-सही कसर भी खत्म हो गई क्योंकि शनिवार तड़के चंद्रमा पर रात शुरु हो जाएगी.

सात सितंबर को तड़के 'सॉफ्ट लैंडिंग' में असफल रहने के बाद चांद पर गिरे 'विक्रम' लैंडर का जीवनकाल 21, सितंबर (शनिवार) को खत्म हो जाएगा क्योंकि 'विक्रम' की कार्य अवधि एक चंद्र दिवस की रखी गई थी. एक चंद्र दिवस धरती के 14 दिनों के बराबर होता है.

हार्ड लैंडिंग के कारण टूट गया था संपर्क

'विक्रम' की हार्ड लैंडिंग के वक्त जमीनी स्टेशन से इसका संपर्क टूट गया था. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन सात सितंबर से ही लैंडर विक्रम से संपर्क साधने के प्रयास कर रहा था, लेकिन, इसमें सफलता नहीं मिली. 'विक्रम' के भीतर ही रोवर 'प्रज्ञान' बंद है जिसे चांद की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग को अंजाम देना था, लेकिन लैंडर के गिरने और संपर्क टूट जाने के कारण ऐसा नहीं हो पाया.

ऑर्बिटर सफलतापूर्वक चंद्रमा के चक्कर लगा रहा

भारत को भले ही चांद पर लैंडर की 'सॉफ्ट लैंडिंग' में सफलता नहीं मिल पाई, लेकिन ऑर्बिटर चंद्रमा के चक्कर लगा रहा है. यदि 'विक्रम' की 'सॉफ्ट लैंडिंग' में सफलता मिलती तो रूस, अमेरिका और चीन के बाद भारत ऐसा करने वाला दुनिया का चौथा देश बन जाता.

सिवन बोले, चंद्रयान-2 मिशन ने 98 फीसदी लक्ष्य कर लिया है हासिल

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष के. सिवन ने शनिवार को भुवनेश्वर में कहा कि चंद्रयान-2 मिशन ने अपना 98 फीसदी लक्ष्य हासिल किया है जबकि वैज्ञानिक लैंडर विक्रम के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं. सिवन ने यह भी कहा कि चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर ठीक से काम कर रहा है और तय वैज्ञानिक प्रयोग ठीक से कर रहा है. सिवन ने कहा कि इसरो 2020 तक दूसरे चंद्रमा मिशन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है. मेरी प्राथमिकता अगले वर्ष तक मानव रहित मिशन है. पहले हमें समझना होगा कि लैंडर के साथ क्या हुआ. उन्होंने कहा कि विक्रम के साथ संवाद होने का विश्लेषण राष्ट्रीय स्तर की समिति कर रही है जिसमें शिक्षाविद और इसरो के विशेषज्ञ शामिल हैं.